REPORT OF THE DEPARTMENT-RELATED PARLIAMENTARY STANDING COMMITTEE ON RAILWAYS

SHRI MUKUT MITHI (Arunachal Pradesh): Sir, I lay on the Table, a copy (in English and Hindi) of the Fourth Report of the Department-related Parliamentary Standing Committee on Railways on 'Demands for Grants (2015-16)' of the Ministry of Railways (Railway Board).

REPORTS OF THE DEPARTMENT-RELATED PARLIAMENTARY STANDING COMMITTEE ON RURAL DEVELOPMENT

श्री महेंद्र सिंह माहरा (उत्तराखंड): महोदय, मैं विभाग संबंधित ग्रामीण विकास संबंधी संसदीय स्थायी समिति के निम्नलिखित प्रतिवेदनों की एक-एक प्रति (अंग्रेज़ी तथा हिन्दी में) सभा पटल पर रखता हूँ:–

(i) Fifth Report on 'Demands for Grants (2015-16)' of the Ministry of Drinking Water and Sanitation;

(ii) Sixth Report on 'Demands for Grants (2015-16)' of the Ministry of Rural Development (Department of Rural Development);

(iii) Seventh Report on 'Demands for Grants (2015-16)' of the Ministry of Rural Development (Department of Land Resources); and

(iv) Eighth Report on 'Demands for Grants (2015-16)' of the Ministry of Panchayati Raj.

MR. CHAIRMAN: Question Hour. ...(*Interruptions*)... Please ...(*Interruptions*)... The Leader of the Opposition. ...(*Interruptions*)... The House is adjourned for fifteen minutes.

The House then adjourned at eight minutes past twelve of the clock.

The House reassembled at twenty-two minutes past twelve of the clock,
MR. CHAIRMAN *in the Chair.*

RE. SUSPENSION OF LISTED BUSINESS FOR DISCUSSING ISSUE OF SUICIDE BY FARMERS

MR. CHAIRMAN: Question Number ...(*Interruptions*)...

श्री नरेश अग्रवाल (उत्तर प्रदेश): माननीय सभापति जी, **...(व्यवधान)...**

MR. CHAIRMAN: Just one minute. ...(*Interruptions*)... The Leader of the Opposition wishes to speak. Yes, please. बताइए। **...(व्यवधान)...** आप बैठ जाइए।

विपक्ष के नेता **(श्री गुलाम नबी आज़ाद)** : मैंने Suspension of Business under Rule 267 का नोटिस दिया है और बहुत सारे हमारे विपक्ष के नेताओं ने और पार्टियों ने भी Suspension of Business के लिए यहां निवेदन किया है। पिछले कई महीनों से जो घटनाएं हो रही हैं किसानों की आत्महत्याएं हो रही हैं पूरे देश में और जिसका culmination पूरे देश ने कल दिल्ली के अंदर देखा है, उसके लिए हम सब ने विपक्ष ने, मेरी पार्टी ने भी, दूसरी पार्टियों ने भी आपसे यह निवेदन किया है कि बिजनेस को सस्पेंड किया जाए और उस पर चर्चा होनी चाहिए, माननीय प्रधान मंत्री जी का स्टेटमेंट होना चाहिए और सभी पॉलिटिकल पार्टीज को न सिर्फ मेरी पार्टी को बल्कि जितने भी यहां विपक्ष के नेतागण हैं, उनके साथी हैं, उनको बोलने का अवसर देना चाहिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री सतीश चंद्र मिश्रा (उत्तर प्रदेश) : हम लोगों ने भी स्वयं दिया है। ...**(व्यवधान)**...

श्री गुलाम नबी आज़ाद : मैं आप सब की तरफ से निवेदन कर रहा हूं, न सिर्फ अपने से बल्कि मैंने बताया कि सभी विपक्ष की पार्टियां चाहती हैं कि यह ऐसा मुद्दा है जिसकी चर्चा आज हर घर में, हर गांव में और पूरे देश में हो रही है। क्या कारण है कि इतने महीनों से देश में जितने किसानों की आत्महत्याएं हो रही हैं, हजारों में संख्या पहुंच गई हैं। मैं कल टेलीविजन पर देख रहा था कि महाराष्ट्र में सिर्फ इसी साल, अभी तो तीन-चार महीने ही हुए, उसमें छः-सात सौ से ज्यादा आत्महत्याएं हुईं। यू.पी. के अंदर, बाकी अन्य स्टेट्स के अंदर, गुजरात के अंदर, कौन सा स्टेट नहीं रहा, सर, यहां तक कि हरियाणा जो पूरे देश को, पंजाब जो पूरे देश को, आंध्र प्रदेश जो पूरे देश को, वेस्टर्न यू.पी. जो पूरे देश के लिए अनाज पैदा करता है, इस दफा हरियाणा और राजस्थान के अंदर भी किसानों ने आत्महत्याएं शुरू कर दी हैं। सर, जब पार्लियामेंट का election हो रहा था, उस समय माननीय प्रधान मंत्री जी, अपनी पार्टी की तरफ से प्रधान मंत्री के candidate थे, उन्होंने दो चीजें बार-बार दोहराई थीं और हर सभा में दोहराई थीं कि मुझे वोट दे दो, मेरी पार्टी को सत्ता में लाओ, मुझे प्रधान मंत्री बनाओ, किसानों की आत्म-हत्याएं रोक दी जाएंगी और साहूकारों से उन्हें निजात मिलेगी। सर, आज इस सरकार को बने 11 महीने हो गए हैं और उन्हीं प्रधान मंत्री के नेतृत्व में शायद आज जितने किसान आत्म-हत्याएं कर रहे हैं, विशेष रूप से उन राज्यों में जहां के किसानों ने कभी आत्म-हत्या नहीं की, वहां भी हालत इतनी खराब हो गयी है कि आज हमारे दरवाजे तक यानी दिल्ली के अंदर, जिस तरह से गजेंद्र सिंह ने, जो कि राजस्थान के रहने वाले थे, उन्होंने आत्म-हत्या की और इसी तरह से अलवर, राजस्थान के रहने वाले दूसरे किसान हरसूल जाटव ने भी आत्म-हत्या की है, लेकिन कल दिल्ली में जिस तरह से पेड़ से लटककर गजेंद्र सिंह ने आत्म-हत्या की है, इस के लिए केंद्र की सरकार और दिल्ली की "आप" की सरकार—दोनों मुज़रिम हैं। ...**(व्यवधान)**...

†کا نوٹس دیا ہے اور بہت سارے ہمارے وِپکش کے نیتاؤں نے Suspension of Business under Rule 267 اور پارٹیوں نے بھی Suspension of Business کے لئے یہاں نِویدن کیا ہے۔ پچھلے کئی مہینوں سے جو گھٹنائیں ہورہی ہیں کسانوں کی خودکشیاں ہورہی ہیں ہورے ملک میں اور جس کا culmination پورے دیش نے کل دہلی کے اندر دیکھا ہے، اس کے لئے ہم سب نے وِپکش نے، میری پارٹی نے بھی، دوسری پارٹیوں نے بھی آپ سے یہ نِویدن کیا ہے کہ بزنیس کو سسپنڈ کیا جائے اور اس پر چرچہ ہونی چاہئے، مانیئے پردھان منتری جی کا اسٹیٹمنٹ ہونا چاہئے اور سبھی پالیٹیکل پارٹیوں کو نہ صرف میری پارٹی کو بلکہ جتنے بھی یہاں وِپکش کے نیتاگن ہیں، ان کو بولنے کا موقع دینا چاہئے ---مداخلت---

† Transliteration in Urdu Script.

†**شری ستیش چندر مشرا:** ہم لوگوں نے بھی خود دیا ہے ۔۔۔مداخلت۔۔۔

†**شری غلام نبی آزاد :** میں آپ سب کی طرف سے نِویدن کررہا ہوں، نہ صرف اپنے سے بلکہ میں نے بتایا کہ سبھی وِپکش کی پارٹیاں چاہتی ہیں کہ یہ ایسا مدعا ہے جس کی چرچہ آج ہر گھر میں، ہر گاؤں میں اور پورے دیش میں ہورہی ہے۔ کیا وجہ ہے کہ اتنے مہینوں سے دیش میں جتنے کسانوں کی خودکشیاں ہورہی ہیں، ہزاروں میں تعداد پہنچ گئی ہے۔ میں کل ٹیلی ویژن پر دیکھ رہا تھا کہ مہاراشٹر میں صرف اسی سال، ابھی تو تین چار مہینے ہی ہوئے، اس میں چھ سات سو سے زیادہ خودکشیاں ہوئیں۔ یوپی کے اندر، باقی دوسرے اسٹیٹس کے اندر، گجرات کے اندر، کون سا اسٹیٹ نہیں رہا، سر، یہاں تک کہ ہریانہ جو پورے دیش کو، پنجاب جو پورے دیش کو، آندھرا پردیش جو پورے دیش کو، ویسٹرن یوپی جو پورے دیش کے لئے اناج پیدا کرتا ہے، اس دفعہ ہریانہ اور راجستھان کے اندر بھی کسانوں نے خودکشیاں شروع کردی ہیں۔

سر، جب پارلیمنٹ کا الیکشن ہورہا تھا، اس وقت مانّیے پردھان منتری جی، اپنی پارٹی کی طرف سے پردھان منتری کے candidate تھے، انہوں نے دو چیزیں بار بار دوہرائی تھیں اور ہر سبھا میں دوہرائی تھیں کہ مجھے ووٹ دے دو، میری پارٹی کو ستّہ میں لاؤ، مجھے پردھان منتری بناؤ، کسانوں کی خودکشی روک دی جائیں گی اور ساہوکاروں سے انہیں نجات ملے گی۔ سر، آج اس سرکار کو بنے 11 مہینے ہو گئے ہیں اور وہی پردھان منتری کی قیادت میں شاید آج جتنے کسان خودکشی کر رہے ہیں، خاص طور سے ان راجیوں میں جہاں کے کسانوں نے کبھی خودکشی نہیں کی، وہاں بھی حالت اتنی خراب ہو گئی ہے کہ آج ہمارے دروازے تک یعنی دہلی کے اندر، جس طرح سے گجیندر سنگھہ نے، جو کہ راجستھان کے رہنے والے تھے، انہوں نے خودکشی کی اور اسی طرح سے الور، راجستھان کے رہنے والے دوسرے کسان ہرسول جاٹو نے بھی خودکشی کی ہے، لیکن کل دہلی میں جس طرح سے پیڑ سے لٹک کر گجیندر سنگھہ نے خودکشی کی ہے، اس کے لئے کیندر کی سرکار اور دہلی کی "آپ" کی سرکار، دونوں مجرم ہیں ۔۔(مداخلت)۔۔۔

श्री सभापति : आपने एक पॉइंट उठाया है, I have received similar notices from different other groups also. I want to consult the Government on how to proceed on a matter which is obviously agitating the mind of the House. ...(*Interruptions*)...

श्री सतीश चंद्र मिश्रा : सर, पहले हम सभी को सुन लीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री नरेश अग्रवाल : सर, हमारी पार्टी ने भी नोटिस दिया है। ...**(व्यवधान)**...

श्री गुलाम नबी आज़ाद : सर, मैं एक ही बात बताना चाहता हूं।

† **جناب غلام نبی آزاد :** سر، میں ایک ہی بات بتانا چاہتا ہوں۔

श्री सभापति : अब खत्म कीजिए।

श्री गुलाम नबी आज़ाद : सर, जिस तरह से कल आत्म-हत्या हुई, उस बारे में चीफ मिनिस्टर ने कहा कि मैं और मेरे साथी 45 मिनट से पुलिस को कह रहे थे कि इसे बचाओ।

†**جناب غلام نبی آزاد :** سر، جس طرح سے کل خودکشی ہوئی، اس بارے میں چیف منسٹر نے کہا کہ میں اور میرے ساتھی 45 منٹ سے پولیس کو کہہ رہے تھے کہ اسے بچاؤ۔

MR. CHAIRMAN: We can go into that later. Venkaiahji, please.

† Transliteration in Urdu Script.

श्री गुलाम नबी आज़ाद : सर, मेरा निवेदन है कि इस विषय पर आज पूरे दिन बहस होनी चाहिए और माननीय प्रधान मंत्री जी को खुद इस सदन में आकर आश्वासन देना चाहिए कि आगे से ऐसी घटना नहीं होने पाए। ...**(व्यवधान)**...

جناب غلام نبی آزاد : سر، میرا نویدن ہے کہ اس وشئے پر آج پورے دن بحث ہونی چاہئے اور مانئے پردھان منتری جی کو خود اس سدن میں آکر آشواسن دینا چاہئے کہ آگے سے ایسی گھٹنا نہیں ہونے پائے ---(مداخلت)---

MR. CHAIRMAN: One minute. ...(*Interruptions*)... आप पहले सुन लीजिए। ...**(व्यवधान)**...

THE MINISTER OF URBAN DEVELOPMENT; THE MINISTER OF HOUSING AND URBAN POVERTY ALLEVIATION; AND THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI M. VENKAIAH NAIDU): Hon. Chairman, Sir, ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Just one minute. ...(*Interruptions*)...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I am not giving reply. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, just one minute. Just one minute. A very important issue has been raised on which the minds of the Members are exercised. I only want to ascertain how to proceed in the matter and that is why I have requested the Minister for Parliamentary Affairs ...(*Interruptions*)...

श्री सतीश चंद्र मिश्रा : सर, पहले और लोगों को भी सुन लीजिए ...**(व्यवधान)**...

श्री नरेश अग्रवाल : सर, जिन लोगों ने नोटिस दिया है, उन्हें पहले सुन लीजिए। यह हमारा राइट है।

श्री सभापति : आपका राइट ठीक है। ...**(व्यवधान)**...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: We are not discussing the issue. We are discussing the method how to discuss the issue. If I have heard the Leader of the Opposition.

श्री नरेश अग्रवाल : आपने सुना ही नहीं, तो कैसे जवाब दे देंगे?

श्री एम. वेंकैया नायडुः मैं जवाब नहीं दे रहा हूं ...**(व्यवधान)**... Can we have it two times? One is making out a case and then discussing the issue and then, in that also, people start making political allegations or political comments. ...(*Interruptions*)... There will be counter criticism. ...(*Interruptions*)... What happened ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: All right.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, I will politely submit to the House that as far as the Government is concerned, the Government has no problem to discuss

† Transliteration in Urdu Script.

this issue which is very important. Not only the unfortunate suicide happened in Delhi yesterday but also the suicides which were mentioned by our Leader of the Opposition and also a series of suicides that have been taking place over the years is a matter of history. The point is, we should all collectively put our minds together and then come to some short-term conclusions and long-term conclusions. For that, the best way is ...(*Interruptions*)... Please. The best way is to have a debate. I have no problem from our side. I would request the Home Minister to come and be present when the discussion takes place. ...(*Interruptions*)...

श्री सतीश चंद्र मिश्राः सर, आप हमारी बात भी सुन लीजिए। **...(व्यवधान)...**

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, already a ruling has been given by the Chair about who has to reply on behalf of the Government. The Government would decide that. ...(*Interruptions*)...

श्री गुलाम नबी आज़ादः सर, डिस्कशन आज होना चाहिए। **...(व्यवधान)...**

قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد) : سر، ڈسکشن آج ہونا چاہئے ---مداخلت---

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Who has to reply has to be decided by the Government, by the concerned Minister. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Fair enough. ...(*Interruptions*)...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: We are in the Cabinet. We are not a one-man Party. ...(*Interruptions*)... We are not a one-man Party. We are a Government. We have a Cabinet. ...(*Interruptions*)... If they don't want to have a discussion and wish to score political points, that is a different matter ...(*Interruptions*)... It is very unfair, Sir. They are forgetting ...(*Interruptions*)... For 15 years they were ...(*Interruptions*)... They too have the accountability. They must take the responsibility ...(*Interruptions*)... the situation ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: This is not good. ...(*Interruptions*)... The House is adjourned for 15 minutes.

The House then adjourned at thirty-one minutes past twelve of the clock.

The House reassembled at forty-six minutes past twelve of the clock,
MR. CHAIRMAN *in the Chair.*

SHRI NARESH AGRAWAL: Chairman, Sir,...

† Transliteration in Urdu Script.

MR. CHAIRMAN: Yes, I know. Some others wish to say something. सुश्री मायावती जी क्या आप बोलना चाहती हैं?

सुश्री मायावती (उत्तर प्रदेश)ः जी, हां।

SHRI NARESH AGRAWAL: Sir, I have a point of order.

MR. CHAIRMAN: After her. Members may speak one by one. Let me hear everyone.

श्री शरद यादव (बिहार)ः सभापति जी, दो मिनट मैं भी बोलना चाहता हूं। कृपया मुझे भी समय दीजिए।

श्री सभापतिः सुश्री मायावती जी, आप दो मिनट में अपनी बात कह दीजिए, ताकि मैं दूसरों की बात भी सुन लूं।

सुश्री मायावतीः माननीय सभापति जी, उत्तर प्रदेश सहित देश के कुछ अन्य राज्यों में हुई बेमौसमी बरसात व ओले आदि पड़ने से इस बार किसानों की फसल को बड़ा भारी नुकसान हुआ है, लेकिन दुख की बात यह है कि ऐसी स्थिति में केंद्र के साथ-साथ राज्यों की सरकारों को भी उनकी आर्थिक मदद करने के मामले में, समय से जो उचित कदम उठाने चाहिए थे, वे नहीं उठाए गए हैं। अर्थात् इस मामले में केंद्र व राज्य सरकारों के अभी तक के रवैये को देखकर हमारी पार्टी को ऐसा प्रतीत होता है कि इनके द्वारा पीड़ित किसानों की आर्थिक मदद कम, बल्कि उनकी आड़ में राजनीति ज्यादा की जा रही है, जिसकी वजह से अब तक, पूरे देश में, जहां-जहां भी बेमौसमी बरसात हुई है और ओले आदि पड़े, उसकी वजह से किसानों को बड़ा भारी नुकसान हुआ और केंद्र व राज्यों की सरकारों ने किसानों की समय पर मदद नहीं की। उसकी वजह से काफी किसानों ने आत्महत्या कर ली है।

महोदय, इतना ही नहीं, बहुत से तो ऐसे किसान हैं, जिनकी अपनी बरबाद हुई फसल को देखकर ही सदमे से मौत हो गई। यह संख्या दिन-प्रतिदिन काफी बढ़ती जा रही है।

महोदय, कल दिल्ली, जो देश की राजधानी है, उसमें भी राजस्थान के एक किसान ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। आत्महत्या का यह काफी गंभीर मामला है। हालांकि राजस्थान का जो प्रकरण है, उसके बारे में मीडिया से मुझे जो जानकारी मिली है, उसके अनुसार बताया जा रहा है कि राजस्थान के जिस इलाके के वे रहने वाले हैं, उस इलाके में लगभग 24 प्रतिशत फसल को नुकसान हुआ है। ऐसा वहां के तहसीलदार का कहना है। मैं यह कहना चाहती हूं कि उनकी फसल का तो ज्यादा नुकसान नहीं हुआ है। इसलिए तहसीलदार ने कहा है कि उन्हें मुआवजा नहीं मिल सकता है। यह काफी गंभीर मामला है और जांच का विषय है और केंद्र सरकार को चाहिए कि वह इस मामले को गंभीरता से ले। कहीं ऐसा तो नहीं है कि इसकी आड़ में राजनीति की गई है और उस किसान को उकसाया गया है, इसलिए इसकी सी.बी.आई. से जांच होनी चाहिए और जो भी लोग इसमें दोषी पाए जाएं, उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही होनी चाहिए।

श्री सभापति : ठीक है, थैंक यू।

सुश्री मायावती : माननीय सभापति महोदय, इसके साथ ही मैं यह भी कहना चाहती हूं कि

इस बार किसानों की जो फसल नष्ट हुई है, उसकी वजह से किसान बहुत दुखी हैं। उनकी आर्थिक मदद करने के मामले में केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा घोषणाएं तो काफी की गई हैं, केंद्र की सरकार ने भी काफी घोषणाएं की हैं और स्टेट गवर्नमेंट्स ने भी, जहां-जहां कुदरती नुकसान हुआ है, वहां काफी घोषणाएं की हैं, लेकिन किसानों को सही समय पर मुआवज़ा नहीं मिल रहा है, तो इसके बारे में केंद्र सरकार से मेरा यह कहना है कि मुआवज़ा देने की जो प्रक्रिया है, जो लंबे अरसे से चली आ रही है, चाहे वह स्टेट गवर्नमेंट की है या सेंट्रल गवर्नमेंट की है, उसमें बदलाव लाने की जरूरत है क्योंकि मुआवज़े के मामले में पहले स्टेट गवर्नमेंट उसका सर्वे कराती है, तब कहीं जाकर उनको मुआवज़ा मिलता है और सर्वे एकदम नहीं होता, उसके बाद वे सेंट्रल गवर्नमेंट को रिपोर्ट भेजते हैं। सेंटर वाले यहां से टीम भेजते हैं। तो इसी में काफी समय लग जाता है और किसान टूट जाता है और उसको समय पर आर्थिक मदद नहीं मिल पाती है। इसके अलावा ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति : थैंक यू। अब आप समाप्त कीजिए प्लीज़ ...**(व्यवधान)**...

सुश्री मायावती : माननीय सभापति जी, मैं सेंट्रल गवर्नमेंट से एक रिक्वेस्ट और करना चाहती हूं कि किसानों ने बैंकों और साहूकारों से ऋण लेकर जो फसल लगाई थी, जिसमें उनको काफी नुकसान हुआ है ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति : प्लीज़ अब आप समाप्त कीजिए।

सुश्री मायावती : तो उनके परिवार के खर्चे का तो नुकसान हुआ ही है, उनके सारे सामाजिक कार्यक्रम भी रद्द हो गए हैं, इसलिए सेंट्रल गवर्नमेंट को इस मामले में सख्त कदम उठाने चाहिए। यह सेंट्रल गवर्नमेंट की जिम्मेदारी बनती है कि किसानों ने जो बैंकों से कर्ज़ा लिया है, साहूकारों से कर्ज़ा लिया है, उसको माफ करने के लिए केंद्र सरकार को आगे आना चाहिए। इसके साथ ही माननीय सभापति जी, मैं एक बात और कहना चाहूंगी ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति : अब आप समाप्त कीजिए, आपने दस मिनट ले लिए हैं।

सुश्री मायावती : यह मेरी रिक्वेस्ट है कि अभी हाल ही में बिहार के कुछ जिलों में आंधी-तूफान, जबरदस्त चक्रवात आया। ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति : जी हां, यह सबको मालूम है।

सुश्री मायावती : इसमें काफी लोग मारे गए और जान-माल का नुकसान हुआ है।

MR. CHAIRMAN: Please conclude. Now, Sharad Yadav ji.

सुश्री मायावती : इस मामले में केंद्र सरकार से मेरी यह रिक्वेस्ट है कि उसको आगे आकर उनकी मदद करनी चाहिए। यह किसानों का मामला बहुत महत्वपूर्ण है।

श्री सभापति : थैंक यू।

सुश्री मायावती : इस पर दो-तीन मिनट बोलने से काम नहीं चलेगा। हमारी रिक्वेस्ट यह है कि इसके ऊपर काफी विस्तृत चर्चा होनी चाहिए और हर दल को इस पर बोलने का मौका मिलना चाहिए।

श्री सभापति : थैंक यू, शरद जी, बोलिए। ...**(व्यवधान)**...

सुश्री मायावती : हमें विस्तार से अपनी बात रखने का मौका मिलना चाहिए और सेंट्रल गवर्नमेंट को हर इश्यू के ऊपर, जैसे किसानों की जो प्रॉब्लम है, वे बहुत परेशान हैं और उनको मुआवज़ा भी नहीं दिया जा रहा है ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति : दूसरों को भी बोलने का मौका दीजिए।

सुश्री मायावती : उत्तर प्रदेश में तो इतना बुरा हाल है कि वहां पर कहीं पचास रुपए के चेक, सौ रुपए के चेक ऐसे दिए जा रहे हैं ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति : प्लीज़... शरद यादव जी, बोलिए। ...**(व्यवधान)**... आप बोलिए। ...**(व्यवधान)**...

सुश्री मायावती : और सेंट्रल गवर्नमेंट उनकी मदद नहीं कर रही है, तो सेंट्रल गवर्नमेंट को भी मदद करनी चाहिए। हर मुद्दे के ऊपर सेंट्रल गवर्नमेंट को माननीय सदस्यों की बात सुननी चाहिए।

MR. CHAIRMAN: You have overshot your time.

सुश्री मायावती : इसका कोई हल निकलना चाहिए, केवल चर्चा करके इस समस्या का समाधान होने वाला नहीं है। तो सेंट्रल गवर्नमेंट को चाहिए कि इसके बारे में वह क्या कदम उठा रही है, यह सदन को बताए, धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Thank you. Now, Sharad Yadav ji. Please be as brief as you can.

श्री शरद यादव : चेयरमैन सर, आप जल्दी-जल्दी कह रहे हैं, तो ऐसे हाहाकार में... मैं कहना चाहता हूं कि हम लोगों को बोलने का शौक नहीं है। मैं आपसे एक ही विनती कर रहा हूं कि इस पर समय के बगैर... मैं उस पर नहीं जा रहा हूं, लेकिन मेरी आपसे इतनी विनती है कि इसमें इतनी जल्दी.... जब इतना हाहाकार है कि मौत हमारे सिर पर खड़ी हो गई है, तो मेरी विनती यह है कि हम यह रास्ता छोड़ दें कि इसकी गलती है या उसकी गलती है। मैं भारत सरकार से, नायडु साहब से निवेदन करना चाहता हूं कि सबसे ज्यादा आसान तरीका किसान की मदद करने का यह है कि जो आपके पास बहुत बड़ी एजेंसी एफ.सी.आई. है ...**(व्यवधान)**... तो एफ.सी.आई. जो आपके पास है, और कोई रास्ता नहीं है, मेरी यह बात जान लीजिए, मैं अपने अनुभव से बोल रहा हूं कि तंत्र इतना ज्यादा गड़बड़ है कि उसके बारे में बोलने की जरूरत मैं नहीं समझता।

लेकिन मैं एक बात कहना चाहता हूं कि जो प्रोक्योरमेंट है, उस प्रोक्योरमेंट में आप रिलेक्सेशन नहीं दे रहे हैं और रिलेक्सेशन के चलते आपने अभी तीस लाख टन खरीदा है। जो बच गया है, उसे खरीदने से ही किसान को कोई सीधी राहत मिल सकती है। जो आपने घोषणाएं की हैं, राज्य सरकारों ने घोषणाएं की हैं, वे सिर्फ घोषणाएं हैं, वे धरती पर लागू नहीं हुई हैं, जमीनी स्तर पर लागू नहीं हुई हैं। यह ऐसा मौका नहीं है, जो देश में स्थिति उत्पन्न हुई है – ओला, बरसात, आंधी, तूफान, ऐसी स्थिति में मैं आपसे यह विनती करना चाहता हूं कि आप सवेरे नहीं कह पाए हैं, नेपाल का वह इलाका जिसे वृहद कोसी कहते हैं, वहां आदमियों की मृत्यु के संबंध

में आपके पास खबर जाएगी, वह सौ-डेढ़ सौ से ज्यादा हो जाएगी। तूफान की वजह से खड़ी फसल, मकान, पेड़, सब तबाह हो गए। अजीब तरह से मौसम बिगड़ा हुआ है। सरकार का काम है कि जो राहत पहुंचे, उस राहत में, जैसी किसान की हालत है, उसमें चाहे बैंक है, चाहे आप कह रहे हैं कि डेढ़ गुणा करेंगे, चाहे आप कह रहे हैं कि 50 से 33 गुणा करेंगे, यह तो आप कह ही रहे हैं, लेकिन अगर आपके हाथ में तत्काल कोई चीज़ है तो वह तो केवल प्रोक्योरमेंट ही है। प्रोक्योरमेंट में, आप हर कीमत पर किसी भी तरह का अनाज हो, उसे खरीदिए। एक जमाना था, जब अटल जी की सरकार थी, उस सरकार के समय के कई मंत्री यहां बैठे हैं, उस समय इतना स्टॉक हमारे पास था कि एक मंत्री ने कहा कि इसको समुद्र में फेंक दो। मैं आज आपसे कहना चाहता हूं कि किसी भी तरह से सारा अनाज खरीदिए। यह सीधी राहत है जो उसके पास पहुंचेगी। सीधी राहत पहुंचाने का इनके पास अभी कोई रास्ता नहीं है। अभी बहन मायावती जी बोल रही थीं कि जो प्रोसिजर्स हैं, वे इतने लम्बे हैं, इतनी लम्बी प्रक्रिया है, वह लम्बी इसलिए है कि हमारे यहां ईमानदारी तो है ही नहीं। जो तंत्र है, वह इतना बेईमान है कि कई तरह की बाधाएं हमने डाल दी हैं। अब अगर आपके पास कोई रास्ता है तो वह एक ही है। मैं आपसे बार-बार यह बात इसलिए कह रहा हूं, मैं इस बात को फिर से दोहराते हुए सरकार से निवेदन कर रहा हूं कि तत्काल एफसीआई के जरिए आप बड़े पैमाने पर खरीद करिए—कैसा भी अनाज हो, उसे आपको गाड़ना पड़े, खाद बनानी पड़े, समुद्र में फैंकना पड़े, लेकिन यदि उन्हें कोई राहत मिल सकती है तो आपके प्रोक्योरमेंट से मिल सकती है। यह बात मैं अपने अनुभव से कह रहा हूं। मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं कि आपने जो अनाउंसमेंट की, वह अभी नहीं गयी है, प्रधान मंत्री जी ने जो कहा है, वह नहीं गयी है। राज्य सरकारें अपने तरीके से लगी हैं, लेकिन केवल एक ही काम चल रहा है कि इस सरकार का दोष है या उस सरकार का दोष है। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इस बात के चलते इस देश में इतनी बड़ी तबाही हो गयी है, उसका अनुमान भी हमारे पास नहीं है कि कितने लाख है। आपके एग्रीकल्चर मिनिस्टर ने कहा है कि 93 लाख हेक्टेयर फसल खराब हुई है। हमारे पास यह आंकड़ा भी नहीं है। जैसे गरीबों के बारे में हमारे पास आंकड़ा नहीं है, इसी तरह से इस मामले में भी हमारी वही हालत है क्योंकि हमारा तंत्र तो जर्जर और पूरी तरह से ठप है। मेरी आपसे विनती है कि जो यहां हादसा हुआ है, यह जगह ऐसी है, जिसके बारे में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खबर छपती है। हमारे सिर पर ऐसी विकट परिस्थिति पैदा हो गयी है, जो कभी नहीं हुआ। आज हमारे सिर पर मौत नाच रही है और हम लोग सिर्फ इस सदन में बहस कर रहे हैं! हमारे पास तो कुछ नहीं है। सरकार, जिसके हाथ में सब चीज़ है, हथियार है, वह उस हथियार का इस्तेमाल क्यों नहीं करती? उस हथियार को इस्तेमाल करने के संबंध में एक ही चीज़ है। अगर हरियाणा में, पंजाब में अभी पानी गिर जाए, वहां ढेर के ढेर लगे हुए हैं जैसे पहाड़ खड़े हुए हैं। यदि पानी गिर गया तो किसी तरह किसान जो लाया, वह भी बरबाद हो जाएगा। आप तेजी से उसकी खरीद क्यों नहीं कर रहे? हमने खुद यह डिपार्टमेंट चलाया है। आप तेजी से प्रोक्योरमेंट क्यों नहीं करते हैं? सभापति महोदय, मैं आपसे विनती करना चाहता हूं कि यह बहस ऐसी चीज़ नहीं है, सब चीज़ें छोड़ दीजिए, इस देश की यदि कोई चीज धुरी है, यह देश अगर किसी के कारण बचेगा तो वह हिन्दुस्तान का किसान है और इस धुरी पर हम बहस न करें! आपका जो बिज़नेस है, वह बिज़नेस तो कल ही आया है। हम एक दिन और बैठ जाएंगे, शाम को बैठ जाएंगे, लेकिन यह बहस एक-एक मिनट बुलवाकर खत्म नहीं करिए, इस बहस को आगे चलवाइए, इस बहस को

[श्री शरद यादव]

1.00 P.M.

बढ़ाइए। सर, यहां पर कई अनुभवी लोग बैठे हुए हैं, वे उस बहस में अपने सुझाव देंगे और फिर उस बहस में से कोई रास्ता निकलेगा। एक रास्ता मैंने आपको बताया कि मेरे मानस में एक ही चीज़ आती है कि प्रोक्योरमेंट का रास्ता ही उचित है। रामविलास पासवान जी उसके मंत्री हैं, यदि आप छूट दे देंगे तो ये खरीद करा लेंगे।

लेकिन मैं आपसे यही कह रहा हूं कि आप एक चीज़ करिए कि किसान के पास जो थोड़ा-बहुत अनाज बच गया है, उसकी खरीद कर लीजिए। अगर उसकी खरीद नहीं करेंगे, तो उनकी मदद नहीं हो पाएगी। आप कह रहे हैं कि सीधे राहत देंगे, यह राहत किसान तक नहीं पहुंचती है। हिन्दुस्तान में इतने वर्षों से गरीबों के लिए कार्यक्रम हैं, न कहीं इंदिरा आवास बनता है, न कुछ बनता है। बेईमानी चारों तरफ गांव से लेकर, देहात से लेकर दिल्ली तक नृत्य कर रही है। यदि आपके हाथ में कोई चीज है..।

MR. CHAIRMAN: Sharadji, it is 1 o' clock now. Do we adjourn for lunch and resume? ...(*Interruptions*)...

श्री शरद यादव : आप मेरी बात पूरी हो जाने दीजिए। ...**(व्यवधान)**... मेरी बात पूरी हो जाने दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री नरेश अग्रवालः सर, आप कंटीन्यू करा दीजिए। ...**(व्यवधान)**... सभापति महोदय, यह किसानों की तकलीफ का मामला है। ...**(व्यवधान)**... लंच दो बजे कर दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापतिः जी। ...**(व्यवधान)**...

श्री शरद यादव : सभापति महोदय, मैं अपनी बात पूरी नहीं कर पाया हूं। ...**(व्यवधान)**... मंत्री जी, आप मेरी बात पूरी सुन लीजिए। ...**(व्यवधान)**... आप इसे कंटीन्यू करिए। ...**(व्यवधान)**...

MR. CHAIRMAN: How do we proceed? ...(*Interruptions*)...

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री; तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मुख्तार अब्बास नक़वी)ः सभापति महोदय ...**(व्यवधान)**... सभापति महोदय, आप चाहें तो लंच का समय कट कर दीजिए, लेकिन 2.00 बजे के बाद प्रॉपर डिस्कशन शुरू हो, उसके लिए हम तैयार हैं। अभी जो है, वह बहस के लिए बहस हो रही है। अभी डिस्कशन नहीं हो रहा है, इसलिए हमारी रिक्वेस्ट है कि प्रॉपर डिस्कशन शुरू हो। जो माननीय शरद यादव जी कह रहे हैं, जो माननीय नेता विरोधी दल ने कहा है, हम उससे बिल्कुल अलग नहीं हट रहे हैं। हम पूरी तरह से उस पर विस्तार से डिस्कशन चाहते हैं, लेकिन डिस्कशन होना चाहिए, अब बहस के लिए बहस नहीं। ...**(व्यवधान)**...

श्री नरेश अग्रवालः हमने नोटिस दिया है। हमारा नोटिस है। ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापतिः यह तो अति हो रही है। How do we proceed? ...(*Interruptions*)...

श्री नरेश अग्रवालः हमारा नोटिस है। ...**(व्यवधान)**...

वित्त मंत्री; कॉरपोरेट कार्य मंत्री; सूचना और प्रसारण मंत्री; तथा सदन के नेता (श्री अरुण जेटली): सभापति महोदय, आप बहस का समय तय कीजिए और बहस तुरन्त शुरू करवाइए। आप दो बजे ...**(व्यवधान)**... यह बहस के लिए बहस हो रही है। This is a demand for having a discussion. We are agreeing to a discussion. Please start the discussion at two. ...(*Interruptions*)...

श्री नरेश अग्रवालः नहीं, अभी तो हमारी ग्राह्यता सुन लीजिए। हमारे नोटिस की ग्राह्यता सुन लीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री एम. वेंकैया नायडुः सभापति महोदय, नोटिस दिया कि बाकी business अलग रखकर तुरन्त इसके ऊपर चर्चा करनी चाहिए, यह नोटिस है, इतना मेरी समझ में आया है। चेयर ने लीडर ऑफ दि अपोजिशन को मौका दिया, उन्होंने यह argue किया, सुश्री मायावती जी ने और शरद यादव जी ने भी इसके बारे में कहा।

सर, हम सरकार की ओर से शुरू से कह रहे हैं कि ठीक है, हम नोटिस से agree हैं, चर्चा शुरू करो। प्राब्लम क्या है? अभी करनी है, लंच के बाद करनी है, इसके बारे में तय करके आगे बढ़िए।

MR. CHAIRMAN: I have five notices. ...(*Interruptions*)... Now, one way is that I hear for a few minutes each one of those, who have given a notice and then we have a discussion. ...(*Interruptions*)... Is that all right? ...(*Interruptions*)...

श्री नरेश अग्रवाल : सर, पहले हमारी बात सुन लीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री अरुण जेटली : दो बार चर्चा करवाने का क्या लाभ है? ...**(व्यवधान)**...

श्री नरेश अग्रवाल : अभी चर्चा नहीं हो रही है। ...**(व्यवधान)**...

श्री अरुण जेटली : पहली डिस्कशन यह होगी कि चर्चा करवाइए। अब चर्चा करवाइए में शरद जी ने जो बाद में भाषण देना है, वह तो already दे दिया है।

श्री सभापति : अब वह दोबारा नहीं कहेंगे फिर।

श्री अरुण जेटली : इसलिए हम कह रहे हैं कि चर्चा तुरन्त शुरू कीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री नरेश अग्रवालः अगर हमने नोटिस दिया है, तो चेयरमैन साहब, यह चेयर हमारे नोटिस को सुनने के लिए बाउंड है। ...**(व्यवधान)**... आप बाउंड हैं। ...**(व्यवधान)**...

MR. CHAIRMAN: All right. ...(*Interruptions*)... But it is now lunch time. We can only resume after lunch. Thank you. ...(*Interruptions*)... It is 2 o' clock then. The House stands adjourned till 2.00 p.m.

The House then adjourned for lunch at three minutes past one of the clock.